सुख दुख बंने जोइया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी।
ते माटे वली सत सरूपे, मंडल रचियो एहजी।। २५ ।।

दुःख और सुख दोनों तुमने देखे, फिर भी अभी कुछ बाकी है, ऐसा संशय बना रहा। इसलिए सत स्वरूप ने (अक्षर के मन का अव्याकृत स्वरूप) इस कालमाया के ब्रह्माण्ड को बनाया।

ए रामत रची अम कारणे, अमे कारज एणे आव्याजी।
बंनेना मनोरथ पूरवा, अमे रचावी आ मायाजी।। २६ ।।

यह खेल हमारे वास्ते बनाया और हमारे ही वास्ते धनी आए। हम दोनों (ब्रह्म सृष्टि और अक्षर ब्रह्म) की चाहना पूर्ण करने के लिए हमने माया को बनवाया।

संसार रची सुपनना, देखाड्या मांहें सुपनजी।
ते जोऊं अमे अलगा रही, नहीं जोवावालो कोई अनजी।। २७ ।।

संसार सपने का बनाया और हमें भी सपने में ही दिखाया। जिसे हम अलग रहकर देख रहे हैं। हमारे सिवा दूसरा कोई देखने वाला नहीं है।

रामत साथने रूडी पेरे, देखाडी भली भांतजी।
तारतम बुधे प्रकासीने, पूरी ते मननी खांतजी।। २८ ।।

सुन्दरसाथ को अच्छा खेल, अच्छी तरह दिखाया और जागृत बुद्धि तारतम से ज्ञान देकर हमारे मन की चाहना मिटाई।

रामत अमें जे जोई, ते थिर थासे निरधारजी।
सहु मांहें सिरोमण, अखंड ए संसारजी।। २९ ।।

हमने माया का जो खेल देखा है, यह भी अखण्ड हो जाएगा और यह संसार सब में श्रेष्ठ हो जाएगा।

भगवानजी आहीं आविया, जागवाने ततपरजी।
अमे जागसूं सहु एकठा, ज्यारे जासूं अमारे घरजी।। ३०।।

अक्षर भगवान भी जागृत होने के लिए तैयारी में हैं, परन्तु हम दोनों इकट्ठे जागकर घर जाएंगे।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ३२५ ॥

दयानूं प्रकरण

हो वालैया हवे ने हवे, दसो दिस तारी दया।
ए गुण तारा केम विसरे, मुझथी अखंड ब्रह्मांड थया।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! अब तो दसों दिशाओं में आपकी ही दया दिखायी पड़ती है। आपका यह अहसान कैसे भुलाया जा सकता है कि आपने मेरे से ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है।

हवे तो गली हूं दया मांहें, सागर सरूपी खीर।
दया सागर सकल पूरण, एक टीपू नहीं मांहें नीर।। २ ।।

अब तो आपकी दया में ही डूबी हूं। यह मेहर आपका दूध का सागर है। ऐसी मेहर का सागर हर तरह से पूर्ण है। इसमें नीर अर्थात् माया का लेश मात्र भी नहीं है।

Nijanand App

दया मुकट सिर छत्र चमर, दया सिंघासन पाट।
दया सर्वे अंग पूरण, सहु दया तणों ए ठाट।। ३ ।।

आपकी मेहर का सिंहासन है। दया का पाट (तख्त) है, दया का मुकुट, चंवर और छत्र है। सब वस्तुएं अब दया की हैं। इन सब अंगों में ही दया समाई है। चारों तरफ दया की ही शोभा है।

हवे दया गुण हूं तो कहुं, जो अंतर कांई होय।
अंतर टाली एक कीधी, ते देखे साथ सहु कोय।। ४ ।।

अब मेरे और आपके बीच में कोई अन्तर हो तो आपकी दया की महिमा गाऊं। आपने अन्तर हटा कर अपने समान कर लिया है। मेरे अन्दर आ विराजे हैं, जिसको सब साथ देखेगा।

पल पल आवे पसरती, न लाभे दयानो पार।
बीजूं ते सहु में मापियूं, आगल रही आवार।। ५ ।।

अब आपकी दया पल-पल में बढ़ रही है। इस दया का कोई पार ही नहीं है। अन्य सब गुणों को मैंने नापा है, पर आपकी दया इस बार सबसे आगे है (अधिक है)।

आटला ते दिन अमें घर मधे, लीला ते राखी गोप।
हवे बुध तांणे पोते घर भणी, तेणे प्रगट थाय सत जोत।। ६ ।।

इतने दिन तक मैंने लीला को अपने ही में गुप्त रखा। अब जागृत बुद्धि अपने घर की तरफ खींचती है। जिससे सत का ज्ञान जाहिर होगा।

सब्द कोई कोई सत उठे, तेणे केम करूं हूं लोप।
गोप सर्वे सत थयूं, असत थयूं उद्योत।। ७ ।।

इस ब्रह्माण्ड में कोई-कोई सत शब्द सुनाई देते हैं। उनको मैं क्यों छिपाऊं। इस संसार में सत ज्ञान (परमात्मा की पहचान का ज्ञान) गुप्त हो गया है और झूठी माया के ज्ञान का बोलबाला है। (रोशन है)।

हवे असतने अलगो करूं, केम थावा दऊं सत लोप।
सत असत भेला थया, तेमां प्रकासूं सत जोत।। ८ ।।

अब मैं सत को छिपने नहीं दूंगी। इसलिए असत (झूठ) को हटाती हूं। सत और असत जो यहां मिल गए हैं उनसे सत को निकालकर जाहिर करूंगी।

असत पण करवुं अखंड, करी सतनो प्रकास।
सनंध सतनी समझावी, अंधेर नो करूं नास।। ९ ।।

सत के ज्ञान को जाहिर करके असत को भी अखण्ड करूंगी। सत की पहचान कराकर (प्रमाण देकर) असत ज्ञान का नाश कर दूंगी।

संसा ते सहु संघारिया, असत भागी अंधेर।
निज बुध उठी बेठी थई, भाग्यो ते अवलो फेर।। १० ।।

संशय तो सब समाप्त हो गए हैं। असत का अंधेरा हट गया है। जागृत बुद्धि अब उठ बैठी है, जाहिर हो गई है। उलटा फेर भी हट गया है।

Nijanand App

हवे फेर सहु सवलो फरे, सहुने सत आव्यूं द्रष्ट।
एणे प्रकासे सहु प्रगट कीधूं, जाणी सुपन केरी सृष्ट।। ११ ।।

अब सब जग के लोग सीधी राह पर चलेंगे। सबको सत का ज्ञान दिखाई देने लगा है। इसके प्रकाश से सबको ज्ञान हो गया है कि यह संसार स्वप्न की सृष्टि है (मिटने वाला है)।

रामत जोई काल मायानी, कालमाया ने आसरी।
देखी सुख आ जागनी, जासे ते सर्वे विसरी।। १२ ।।

इस कालमाया के खेल को हमने कालमाया के जीवों के तनों में बैठकर देखा। इस जागनी के सुखों की लीला देखकर पहली दोनों लीलाएं भूल जाएंगी।

आवेस मूं कने धणी तणों, तेणे करूं भेलो साथ।
साथ मली सहु एकठो, विनोद थासे विलास।। १३ ।।

मेरे पास धनी का आवेश है। इससे सुन्दरसाथ को इकट्ठा करूंगी। सब साथ जब इकट्ठा हो जाएगा तो बड़े आनन्द की लीला होगी।

विलास करी विध विधना, त्यारे थासे हरख अपार।
रामत करसूं आनंद मां, आवसे सकुंडल सकुमार।। १४ ।।

सुन्दरसाथ के साथ मिलकर तरह-तरह के आनन्द की लीला होगी, तब बहुत खुशी होगी। जब साकुण्डल शाकुमार आएंगी, तो मैं बड़े आनन्द के साथ लीला करूंगी।

त्यारे साथ सहु आवी रेहेसे, रामत थासे रंग।
त्यारे प्रगट थासूं पाधरा, पछे उलटसे ब्रह्मांड।। १५ ।।

तब सब सुन्दरसाथ भी आ जाएंगे। आनन्द मंगल की लीला होगी, तब मैं सबके सामने जाहिर हो जाऊंगी। पीछे ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा।

मारा आवेस मांहेंथी भाग दऊं, साथने सारी पेर।
मनना मनोरथ पूरा करी, हरखे ते जगवुं घेर।। १६ ।।

जो आवेश मेरे पास है उसे सुन्दरसाथ को बांट दूंगी। सुन्दरसाथ की पूरी तरह से सबके मन की चाहना पूरी करके हंसते हुए घर जागेंगे।

साथ न मूकूं अलगो, साथ मूने मूके केम।
कहूं मारूं साथ न लोपे, साथ कहे करूं हूं तेम।। १७ ।।

मैं सुन्दरसाथ को अलग नहीं करूंगी। सुन्दरसाथ मेरे को कैसे छोड़ेगा ? मेरा कहा सुन्दरसाथ नहीं टालेगा। जो सुन्दरसाथ कहेगा मैं वही करूंगी।

लेस छे कालमायानो, वासनाओ मांहें विकार।
दया द्रष्टे गाली रस करूं, मेली तारतमनो खार।। १८ ।।

सुन्दरसाथ के अन्दर कालमाया के थोड़े-से अवगुण हैं। उनके अवगुणों को तारतम वाणी रूपी साबुन से साफ करके मेहर की दृष्टि से एक रस कर दूंगी।

Nijanand App

विकार काढूं विधोगते, करी दयानो विस्तार।
भली भांते भाजूं भरमना, जेम आल न आवे आकार।। १९ ।।

हर युक्ति से दया का विस्तार करूंगी और सुन्दरसाथ के विकार निकालूंगी। अच्छी तरह से संशय मिटाऊंगी ताकि फिर से माया में न लग जाए।

सत वस्त दऊं साथने, कोई रची रूडो रंग।
मनना मनोरथ पूरा करी, सुख दऊं सर्वा अंग।। २० ।।

सुन्दरसाथ को सच्ची वाणी का ज्ञान दूंगी। कोई अच्छे कार्य का आयोजन कर सबके मन की चाहना पूर्ण करूंगी और सब अंगों को सुख दूंगी।

कालमायानों लेस निद्रा, अने निद्रा मूल विकार।
सर्वा अंगे सुध थाय, करी दऊं तेह विचार।। २१ ।।

कालमाया का जो जरा (थोड़ा) सा अज्ञान और नींद सुन्दरसाथ के विकारों के कारण है, इसलिए मैं ऐसी वाणी सुनाऊंगी कि उन्हें सब प्रकार से सुध आ जाए।

जुगते जां न जगवुं तमने, तो जोगमाया केम थाय।
निरमल वासना कीधा विना, रासमां ते केम रमाय।। २२ ।।

यदि तुमको अच्छी तरह से जागृत नहीं करेंगे तो तुम्हारे जीव योगमाया में अखण्ड कैसे होंगे? जब तक आत्मा को निर्मल नहीं कर देती तब तक जागनी रास कैसे खेली जाएगी?

क्रोधना कडका करूं, उडाडी अलगो नाखूं।
साथ माहें ना दऊं पेसवा, निद्रा ते आडी राखूं।। २३ ।।

क्रोध के टुकड़े-टुकड़े करके अलग फेंक दूंगी और सुन्दरसाथ के अन्दर क्रोध नहीं घुसने दूंगी और अज्ञान को एक तरफ हटा दूंगी।

आमला अवला अति घणा, कालमायाना छे जोर।
बांक चूक विसमा टालीने, करी दऊं ते पाधरा दोर।। २४ ।।

इस भवसागर में कालमाया का बड़ा जोर है। इसमें उलटी भंवरियां (भंवर) हैं। इसके अन्दर की कठिन भूल-चूक हटाकर सीधा रास्ता कर दूंगी।

गुण पख इंद्री अवला, करूं ते सवला साथ।
करी निरमल सुख दऊं नेहेचल, करूं ते सहुने सनाथ।। २५ ।।

सुन्दरसाथ के अन्दर जो भ्रान्ति आ गई है, उसे हटाकर सीधे रास्ते पर लाऊंगी। सबको निर्मल करके हकीकत में सनाथ बना दूंगी।

प्रकृत सर्वे पिंडनी, सवली करूं सनमुख।
दुख दावानल करूं अलगो, देखाडूं ते अखंड सुख।। २६ ।।

तनों के सभी स्वभावों को सीधा कर दूंगी। घर के अखण्ड सुख दिखलाकर माया के दुःख की अग्नि शान्त कर दूंगी।

Nijanand App

मन चित बुध अहंमेव अवला, करूं जोरावर जेर।
हवे हार्‌या सर्वे जीताडी, फेरवुं ते सवले फेर।। २७ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार जो उलटे चल रहे थे, उनको माया की तरफ से हटाकर धनी के रास्ते के लिए बलवान बना दूंगी। अब जो हारे बैठे हैं उन सबको सीधा ज्ञान देकर जिता दूंगी।

चोर टाली करूं वोलावो, सुख सीतल करूं संसार।
विध विधना सुख दऊं विगतें, कांई रासतणा आवार।। २८ ।।

गुण, अंग, इन्द्रिय जो धनी के कार्यों में काम चोर हैं, इनको वाणी से पलट कर सीधा कर दूंगी और संसार के झंझट मिटाकर सब संसार को अखण्ड सुख दूंगी। इस बार जागनी रास के अनेक प्रकार के सुख दूंगी।

कोइक दिन साथ मोहना जलमां, लेहेर विना पछटाणा।
वासना घणूं वल्लभ मूने, न सहूंते मुख करमाणा।। २९ ।।

कुछ दिन सुन्दरसाथ वाणी के ज्ञान के बिना भवसागर में डूबते रहे। यह परमधाम की आत्माएं मुझे बहुत प्यारी हैं। इनके कुम्हलाए (मुरझाए) मुख को मैं देख भी नहीं सकती।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ३५४ ॥

प्रकरण हांसीनूं

मारा साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसीनों छे ठाम।
आप वालो घर विसरी, हवे जागी भूलो कां आम।। १ ।।

हे मेरे सम्बन्धी सुन्दरसाथजी! सावधान! यह ठिकाना (स्थान) ही हांसी (हंसी) का है। इसमें अपने आपको, घर को और धनी को भूल गए थे। अब जागकर भी इस तरह क्यों भूलते हो?

साथजी तमने रामत, जोयानो छे ख्याल।
जेनूं मूल नहीं तेणे बांधिया, ए हांसीनो छे हवाल।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुमको खेल देखने की इच्छा पैदा हुई थी। माया जिसका मूल ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। (मान-सम्मान) यह हांसी (हंसी) का हाल है।

तमे मांगी रामत विनोदनी, तेणे विलस्या तमारा मन।
वात वालाजीनी विसरी, जे कह्या मूल वचन।। ३ ।।

तुमने तो विनोद के लिए (आनन्द के लिए) खेल मांगा था। इसने तुम्हारे मन को अपनी तरफ फिरा रखा है। अपने धनी की बात जो परमधाम में कही थी, वह भूल गए हो।

गूंथो जाली दोरी विना, आप बांधो मांहें अंग।
अंग विना तमे तरफडो, कांई ए रामतना रंग।। ४ ।।

माया, जाहिर में कोई डोरी नहीं है। फिर भी इसका जाल गूंथ कर अपने को बांध रहे हो। तुम्हारे यहां तन भी नहीं हैं। बिना तन के ही तड़प रहे हो। यही खेल का रूप है।

Nijanand App